हे भगवान! मेरे विश्वास की पुष्टि करो

हो सकता है कि ईश्वर ने हमें बनाया हो, मगर इतना तय है कि हम उसके इस कर्ज़ को भलीभांति चुकाते हैं। अनजाने में ही सही, आस्थावान लोग विवादास्पद मुद्दों पर अपने ही विचारों को ईश्वर में देखते हैं। अपने विचारों का श्रेय ईश्वर को देकर स्वयं अपने विचारों को पुष्ट करने में मदद मिलती है। हाल ही में शिकैगो विश्वविद्यालय के निकोलस एप्ली और उनके साथियों ने ये विचार प्रोसीडिंग्स ऑफ नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज़ (यू.एस.) में प्रकाशित एक अध्ययन में व्यक्त किए हैं।

शोधकर्ताओं ने कुछ वालंटियर्स से विवादास्पद मुद्दों पर अपनी राय बताने को कहा। ये वालंटियर्स पहले ही बता चुके थे कि वे ईश्वर में यकीन करते हैं। विवादास्पद मुद्दों में गर्भपात और मृत्यु दंड जैसे मुद्दे शामिल थे। शोधकर्ताओं ने वालंटियर्स से यह भी पूछा कि उन्हें क्या लगता है कि इन मुद्दों पर ईश्वर, किसी औसत अमेरिकी व्यक्ति और बिल गेट्स जैसी हस्तियों के विचार क्या हैं।

इसके बाद शोध दल ने इन वालंटियर्स से कुछ ऐसे काम करने को कहा जिन्हें करते हुए मौजूदा नज़रिए में थोड़ी नरमी आने की संभावना थी। जैसे मृत्यु दंड पर एक व्याख्यान तैयार करना जिसमें वे अपने मत के विपरीत मत का प्रतिपादन करें। पता चला कि ऐसा करते हुए, पहले ईश्वर को जिन विचारों का श्रेय दिया गया था, उनमें तो बदलाव हुआ मगर अन्य लोगों के विचारों के बारे में नहीं।

अध्ययन के बाद शोध टीम का निष्कर्ष है कि "हो सकता है कि लोग धार्मिक शक्तियों को एक नैतिक दिक्सूचक के रूप में इस्तेमाल करते हैं और इस आधार पर नैतिक फैसले करते हैं कि उनके विचार में ईश्वर क्या सोचता है। मगर किसी भी दिक्सूचक को सदा उत्तर की ओर इशारा करना चाहिए, चाहे व्यक्ति किसी भी दिशा में मुंह करके खड़ा हो। मगर हमारे इस शोध से पता चलता है कि ईश्वर के विचारों के बारे में निष्कर्ष लोगों को उसी दिशा में आगे ले जाने का काम करते हैं, जिस दिशा में वे पहले से ही जा रहे थे।"

इस प्रयोग में कोशिश यह की गई थी कि व्यक्ति के अपने विचार में फेरबदल किया जाए। इससे पता चला है कि व्यक्तियों के अपने विचारों का इस बात पर बहुत असर पड़ता है कि वे क्या मानते हैं कि ईश्वर क्या सोचता है जबकि इसका इस बात पर कोई असर नहीं पड़ता कि वे क्या मानते हैं कि अन्य इन्सान क्या सोचते हैं।

अंत में टीम ने कामकाजी मेग्नेटिक रिसोनेन्स इमेजिंग (एफ.एम.आर.आई.) का सहारा लिया। जब ये वालंटियर्स खुद अपने विश्वासों के बारे में, ईश्वर के विचारों के बारे में या 'औसत अमेरिकी' के विचारों के बारे में सोच रहे थे, तब इनके मस्तिष्क का एफ.एम.आर.आई. स्कैन किया गया। पहले दो मामलों में, यानी अपने विश्वास और ईश्वर के विचारों के बारे में सोचते वक्त मस्तिष्क के एक-से हिस्से क्रियाशील हुए। दूसरी ओर, अन्य लोगों के विचारों के बारे में सोचते वक्त दिमाग का वह हिस्सा सक्रिय हुआ जो आम तौर पर दूसरों की मानसिक स्थिति सम्बंधी निष्कर्ष निकालते समय सक्रिय होता है। इससे पता चलता है कि लोग अपने विचारों को ईश्वर के विचारों पर आरोपित करते हैं।

पहले भी इस तरह के अनुसंधानों से पता चला है कि ईश्वर के बारे में सोच कल्पनाशीलता से जुड़ा है। यह अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है कि ईश्वर का प्रस्तुतीकरण अंतरंग रूप से निज से जुड़ा है। आर्हुस विश्वविद्यालय के उफे श्योट का कहना है कि उनके द्वारा किए गए एक अध्ययन से पता चला था कि प्रार्थना करते समय दिमाग के उसी हिस्से का उपयोग होता है जिसका उपयोग किसी मित्र से बातें करते समय होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***